विस्तार किया। सिक्खों ने बारह मिस्लों के रूप में स्वयं को गठित किया, इन मिस्लों के नेताओं का पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों पर नियंत्रण था। इस प्रकार रंजीत सिंह के पिता महासिंह, सुकरचकिया मिस्ल के प्रमुख थे और उनका रावी तथा चिनाब के बीच के क्षेत्र पर नियंत्रण था।

रणजीत (रंजीत) सिंह (1792-1839 ई०) → अपने पिता महासिंह की मृत्यु के बाद सुकरचकिया मिस्ल के नेता के रूप में रणजीत सिंह ने 12 वर्ष की आयु में उत्तराधिकार संभाला और उनके अधिक सिक्खों की शक्ति अपनी चरमोत्कर्ष पर जा पहुँची। अपने शासनकाल के प्रथम पाँच वर्षों के दौरान उन्होंने एक रीजेंसी (अतिशासन) परिषद के माध्यम से शासन चलाया। फिर आगे चलकर 1797 ई० में उन्होंने मिस्ल का पूरा नियंत्रण स्वयं संभाल लिया। उस समय पूरा पंजाब विभिन्न सिक्ख मिस्लों के बीच बँटा हुआ था जो कि विघटन की स्थिति में था। यह वही समय था जब अहमद शाह अब्दाली का पुत्र जमान शाह स्वयं को पंजाब का वैध शासक समझता था। लेकिन 1798 ई० में जमान शाह ने रणजीत सिंह को भंगी मिस्ल के प्रमुख से लाहौर और अमृतसर विजित कर लेने और इन प्रदेशों पर उसके नाम से शासन करने का अधिकार प्रदान किया। 1799 ई० से 1805 ई० के बीच रणजीत सिंह ने भंगी मिस्ल के सरदारों से लाहौर और अमृतसर छीन लिया और लाहौर को अपनी राजनीतिक राजधानी बनाया। अगले कुछ वर्षों में उन्होंने सतलज से झेलम तक के सम्पूर्ण क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। 1808 ई० में सतलज को पार करके उन्होंने फरीदकोट, मलेरकोटला और अम्बाला पर अधिकार कर लिया। लेकिन अगले ही वर्ष 1809 ई० में उन्होंने अमृतसर की संधि के द्वारा सतलज के इस पार के क्षेत्र पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापक प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया। उन्होंने कांगड़ा को अपने राज्य क्षेत्र में मिला लिया और उसके राजा संसारचन्द ने सिक्खों का संरक्षण स्वीकार कर लिया। 1809 ई० में जब अहमदशाह अब्दाली के पौत्र शाह सुजा को उसके भाई ने अपदस्थ कर दिया तब रणजीत सिंह ने उसका सिंहासन वापस दिलवाने में उसे सहायता प्रदान की। इसी अवसर पर शाह सुजा ने प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा जो नादिर शाह भारत से लूटकर ले गया था उसे रणजित सिंह को प्रदान किया। इसी समय दोस्त मोहम्मद ने जब अफगानिस्तान के सिंहासन पर अपना अधिकार कर लिया और पेशावर पर आक्रमण कर दिया जो कि रणजीत सिंह के राज्य का एक भाग था इस आक्रमण के दौरान सिक्ख सेनायें अफगान आक्रमणकारियों के लिये काफी घातक हुई। सिक्ख सेनाओं के प्रधान सेनानायक हरि सिंह नलवा ने अफगानों को पराजित करके जमरूद पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार खैबर-दर्रे के पूर्व का पूरा क्षेत्र रणजीत सिंह के अधिकार में आ गया।

इसी बीच अफगानिस्तान में खस के षड्यंत्रों के कारण ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने दोस्त मोहम्मद को काबुल की राजगद्दी से हटा दिया और उसके स्थान पर शाह शुजा को आसीन कर दिया। इसके साथ ही अंग्रेजों ने रणजीत सिंह एवं शाह शुजा को अंग्रेजी कम्पनी के साथ त्रिपक्षीय संधि (1838ई०) करने के लिये बाध्य किया, जिसके द्वारा ब्रिटिश सेना को पंजाब में से गुजरने की स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। अगले वर्ष 27 जून, 1839ई० को रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई।

रणजीत सिंह एक महान ~~विजेता~~ विजेता ही नहीं अपितु एक महान प्रशासक भी थे। उन्होंने एक कुशल, सुप्रशिक्षित एवं सुसंगठित सेना के द्वारा व्यापक विजयें की। उनके सैन्य संगठन को "भारतीय पृष्ठभूमि में ब्रिटिश-फ्रांसीसी सैन्य व्यवस्था कहा जाता था, क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी सैन्य व्यवस्था की विशेषताओं के आधार पर अपनी सेना का गठन किया था और यूरोपीयन युद्ध प्रणाली का अनुसरण किया। उन्होंने अनेक यूरोपियन लोगों को भी अपनी सेना में भर्ती किया। उनके राज्य की स्थायी सेना को फौज-ए-आइन कहा जाता था, जिसमें विभिन्न यूरोपीय देशों के लोगों जैसे-कि इतालवी, रूसी, अंग्रेज, स्पेनिश, यूनानी, जर्मन, आस्ट्रियाई एवं अमेरिकन राष्ट्रीयताओं के सैनिकों एवं अधिकारियों को भर्ती किया गया। उनके अधिकांश यूरोपीय अधिकारी उनके प्रति बड़े निष्ठावान थे। इसी प्रकार भारतीयों में, उन्होंने हिन्दू, मुसलमानों और सिक्खों को बिना किसी भेदभाव के अपनी सेना में शामिल किया। इस प्रकार रणजीत सिंह की सेना एक मिश्रित सेना थी। उनके सैन्य संगठन की अंग्रेजों तक ने प्रशंसा की है।

रणजीत सिंह के साम्राज्य को सिक्ख साम्राज्य कहना पूर्णतः उचित नहीं है। उन्होंने विभिन्न सिक्ख मिसलों को संगठित करने के लिये अपने राज्य को सरकार-ए-खालसा नाम दिया। उन्होंने अपनी सेना में सिक्ख परम्परा के अनुरूप सलामी देने (वाहे गुरुजी की खालसा, वाहे गुरु जी की फतेह) की परम्परा का प्रचलन किया और सिक्ख गुरुओं के नाम पर किला के नाम रखे (जैसे-गोविन्दगढ़)। रणजीत सिंह ने अपने सिक्कों को नानकशाही सिक्कों के नाम से प्रचारित किया।

रणजीत सिंह के राज्य का स्वरूप भी मिश्रित था। उन्होंने धार्मिक मामलों में उदार नीति का अनुसरण किया और राज्य को 'धर्म प्रधान राज्य' (Theocracy) नहीं बनाया। उनके शासन में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को उच्च पदों पर नियुक्त किया गया। रणजीत सिंह की न्याय व्यवस्था उदार और निष्पक्ष थी। उदार न्याय व्यवस्था के बावजूद उनके साम्राज्य में शान्ति और व्यवस्था बनी रही। यद्यपि वे अशिक्षित थे, फिर भी कहा जाता है कि उनकी स्मरण-शक्ति इतनी विलक्षण थी कि उन्हें अपने साम्राज्य के पूरे 12,000 ग्रामों के नाम याद थे। उन्होंने काश्मीर एवं अन्य सीमान्त क्षेत्रों

को विजित करके, उन्हें अफगानिस्तान में शामिल होने से बचा लिया यद्यपि वे अपने अन्य विरोधियों, यहाँ तक कि अफगानों तक के विरुद्ध प्रबल रूप से शक्तिशाली सिद्ध हुए, परन्तु अंग्रेजों के सम्बन्ध में उन्होंने "हिचकिचाहट और अनिर्णय" की नीति का अनुसरण किया, क्योंकि वे भारत में अंग्रेजों की श्रेष्ठ शक्ति के प्रति आशंकित थे। तथापि वे भारत के पहले शासक थे जिसने सहायक सन्धि को स्वीकार नहीं किया और ब्रिटिश प्रभुसत्ता के सम्मुख समर्पण नहीं किया। फ्रांसीसी यात्री जेक्यूमों ने उन्हें "लघु नेपोलियन बोनापार्ट" का नाम देकर सम्मानित किया है

रणजीत सिंह की मृत्यु के उपरान्त उनके द्वारा इतनी कर्मठता एवं कुशलता से स्थापित, शक्तिशाली ~~सिक~~ सिक्ख साम्राज्य का पतन हो गया और उनका सैन्य संगठन आकस्मिक विस्फोट के कारण प्रज्वलित लपटों की भाँति धराशायी हो गया। 1839 ई० में रणजीत सिंह की मृत्यु और दलीप सिंह के राज्यारोहण (1843 ई०) के बीच उनके तीन उत्तराधिकारी शासकों ने ~~शासक~~ शासन किया। 1843 ई० में रणजीत सिंह का अल्पवयस्क पुत्र दिलीप सिंह गद्दी पर बैठा उसके शासनकाल में अंग्रेजों ने पंजाब पर आक्रमण किया। पहला आँग्ल-सिक्ख युद्ध जो 1845-46 में हुआ अंग्रेजों ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् अंग्रेजों ने सिक्खों के साथ लाहौर की संधि की जिसके द्वारा सिक्खों ने सतलज नदी के दक्षिणी ओर के समस्त प्रदेशों को अंग्रेजों को सौंप दिया। इसके अतिरिक्त लाहौर दरबार पर 1.5 करोड़ रुपये का हर्जाना भी थोपा गया। सिक्ख सेना घटाकर 20,000 पैदल और 12,000 घुड़सवारों तक सीमित कर दी गई तथा एक ब्रिटिश रेजीडेंट को लाहौर में नियुक्त किया गया। इसी प्रकार की कुछ अन्य शर्तें भी आरोपित की गई। चूंकि लाहौर दरबार युद्ध का हर्जाना देने में असमर्थ था, इसलिये सिक्खों ने अंग्रेजों को काश्मीर प्रान्त सहित व्यास और सिंधु नदी के बीच पड़ने वाले पर्वतीय प्रदेश हस्तांतरित करना स्वीकार कर लिया। कम्पनी ने काश्मीर, गुलाब ~~सि~~ सिंह को दे दिया जो इन समझौता वार्ताओं में मुख्य मध्यस्थ था। ~~इ~~ किन्तु इससे पंजाब की स्थिति में सुधार नहीं हुआ और शीघ्र ही इन परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में द्वितीय आँग्ल-सिक्ख युद्ध (1848-49 ई०) हुआ जिसके बाद कम्पनी ने पंजाब को अपने ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। महाराजा दिलीप सिंह को अपदस्थ करके पेंशन दे दी गई। लार्ड डलहौजी द्वारा पंजाब का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय की नीति ~~की अन~~ के तहत विलय कर लिया गया। अनेक इतिहासकारों द्वारा डलहौजी के इस कृत्य की आलोचना की गई है

अँग्रेज एवं पंजाब

मुगलों के समृद्ध और उपजाऊ पंजाब सूबे की राजधानी लाहौर नगर थी। अन्तिम सिख गुरु गोविन्द सिंह के द्वारा खालसा पंथ की स्थापना के बाद सम्पूर्ण सिख जाति को योद्धा समुदाय में संगठित करने के साथ ही पंजाब की 150 वर्ष पुरानी शांति भंग हो गई। नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों से पंजाब में और अधिक अव्यवस्था और अराजकता फैल गई। ईरानी और अफगान आक्रमणों से पूर्व ही सिख नेता बन्दा बहादुर ने मुगल शाही सत्ता के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था और एक प्रकार की शाही उपाधि भी धारण कर ली थी। उसके शिष्य उसे सच्चा पादशाह अथवा सच्चा सम्राट कहते थे, उनके नाम के सिक्के भी ढलवाये गये। 1707 ई० से 1715 ई० के बीच उसके नेतृत्व में सिख एक दुर्जेय शक्ति बन गये थे। उन्हें पराजित करने के लिये मुगलों को 1715 ई० में प्रबल प्रयास करने पड़े। 1716 ई० में सिखों का भाग्य उस समय धूमिल हो गया जब बन्दा बहादुर और उसके पुत्रों को मुगलों ने यातनायें देकर मार डाला।

धीरे-धीरे असंगठित सिख पुनः सिर उठाने लगे और कपूर सिंह के नेतृत्व में उन्हें एक नेता भी मिल गया। कपूर सिंह ने एक ऐसे दल को संगठित किया जो बाद में चलकर दल खालसा अथवा सिखों की धार्मिक सेना के रूप में विकसित हुआ। 1739 ई० में नादिर शाह के आक्रमण के कारण और अव्यवस्था फैली जिससे सिखों को अपनी शक्ति बहाल करने में सहायता मिली। 1748 ई० और 1759 ई० के बीच अहमद शाह अब्दाली के लगातार आक्रमणों के बाद सिखों की शक्ति निश्चित रूप से बहुत ज्यादा बढ़ गई जिसके फलस्वरूप उन्होंने बारी और जालन्धर के दोआब क्षेत्र के बहुत बड़े हिस्से को अपने अधिकार में ले लिया। 1756 ई० में अहमद शाह अब्दाली के चौथे आक्रमण के बाद "सिखों ने चारों ओर से विद्रोह कर दिया" और वे अब्दाली की सत्ता पर प्रहार करने के लिये मराठों के साथ मिल गये। पानीपत के तृतीय युद्ध के बाद अब्दाली ने 1767 ई० तक भारत पर बार-बार आक्रमण किये जिससे पंजाब में गड़बड़ी और अव्यवस्था को और अधिक बढ़ावा मिला, जिसका सिखों ने अपनी सत्ता और प्रभाव को सुदृढ़ करने के लिये सदुपयोग किया।

1761 ई० में पानीपत के तृतीय युद्ध या अहमद शाह अब्दाली के चौथे आक्रमण के उपरान्त सिख इतिहास के सर्वाधिक गौरवपूर्ण अध्याय का शुभारम्भ हुआ। इस अवधि में सिखों ने अफगान आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया। 1765 ई० में विजेता सिख अमृतसर में इकट्ठे हुए और उन्होंने देग, तेग, एवं फतेह मुद्रालेख युक्त शुद्ध चाँदी के सिक्के चलाये जो पंजाब में सिख प्रभुसत्ता की प्रथम उद्घोषणा थी। 1763 ई० और 1773 ई० के बीच सिखों ने अपनी सत्ता को पूर्व में सहारनपुर से पश्चिम में अटक तक और दक्षिण में मुल्तान से उत्तर में कांगड़ा और जम्मू तक

Ajanta Oxford